नई तालीम गाँधीजी की कोशिश, सत्य की खोज है क्योंकि यह जीवन का नेतृत्व कर सकता है - डॉ. टी करुणाकरण

# कनेक्ट

वर्ष.- 5, अंक-4 अप्रैल 2019

श्रद्धांजलि

## डॉ. टी. करुणाकरण - नई तालीम के मार्गदर्शक

एमजीएनसीआरई ने इस महीने के समाचार पत्र को नई तालीम के मार्ग के प्रकाशस्तंभ डॉ. टी. करुणाकरण को समर्पित किया है। एक सक्रीय व्यक्ति, समाज सुधारक, नम्र, महत्वाकांक्षी – ये सारे शब्द हमारे प्रिय डॉ करुणाकरण को परिभाषित नहीं कर सकते, जिन्होनें इस जगत को 12 मार्च के दिन अलविदा कह दिया। यह एमजीएनसीआरई के लिए एक बहुत दुःख का समय है जिसके पीछे एक खालीपन है, एक शून्य जिसे कभी भरा नहीं जा सकता, एक दिव्यज्योति जिसकी जगह कोई नहीं ले सकता। एमजीएनसीआरई के साथ उनकी आखिरी मुलाकात 27- 28 फरवरी को हुई थी जिसमें वे स्कूल और शिक्षक अधिगम पाठ्यक्रम और अभ्यास में नई तालीम और अनुभवजन्य शिक्षा पर आयोजित शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित होने आये थे। उनकी आँखों में ईमानदारी की चमक नई तालीम के सपनों को पूरा करने के लिए आज भी रास्तों की तलाश में है।

**"विद्यालयों को खुबसूरत स्थान बनना चाहिए और ये चिंता करने या भागादौड़ी की जगह नहीं होनी चाहिए जैसे अभी हैं; बच्चे को स्कूल में सब कुछ सीखना चाहिए और रोजगार के लिए चिंतित नहीं होना चाहिए।"**

टी. करुणाकरण ने मद्रास विश्वविद्यालय (1969) से बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग) आईआईटी, दिल्ली से (1975 में) गणितीय प्रणाली सिद्धांत में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। डॉ. टी. करुणाकरण ने 19 साल तक चार आईआईटी में विभिन्न शोध और अकादमिक पदों पर काम किया। वे 1987-1997 तक ग्रामीण प्रौद्योगिकी केंद्र, गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के निदेशक थे। वे 1997 से 2004 तक महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय, मध्य प्रदेश के कुलपति रहें। 2004 से 2007 तक गांधीग्राम विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के कुलपति और महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिकीकरण संस्थान, वर्धा के निदेशक रहे। वे शैक्षिक सुधारों पर मध्य प्रदेश और बिहार सरकार के सलाहकार के पद पर थे। वे कुछ नए मॉडल्स जैसे रूरल इकोनोमिक ज़ोन्स और ग्रामीण उद्योग कृषि (कृषि आधारित उद्योग) तथा आत्महत्या करने वाले किसानों के बच्चों के लिए काम किया। वह मगन संग्रहालय समिति के सचिव भी थे।

**एक शैक्षणिक संस्थान के मूल्य, अकादमिक साजसज्जा के अलावा निम्नलिखित बातें होनी चाहिए: शारीरिक कौशल, सामाजिक व्यवहार और रचनात्मक समस्या को सुलझाने के कौशल। इन पहलुओं को बौद्धिक कौशल, शारीरिक कौशल आदि नामों से जाना जाता है। दिलचस्प बात यह है कि नई तालीम अपने स्वभाव से ही इन कौशलों को विकसित करने का इरादा रखती है जो एक सफल जीवन के लिए जरूरी हैं। - डॉ. टी.करुणाकरण.**

डॉ. टी.करुणाकरण ने महसूस किया कि विश्वविद्यालयों को स्कूली शिक्षा का संरक्षक होना चाहिए।

**नई तालीम पर डॉ. टी. करुणाकरण के विचार**

गुंटविग, गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर और अब्राहम लिंकन – इन सभी ने नई तालीम की शुरुआत की। स्कैंडिनेवियाई देशों में बिल्कुल भी भ्रष्टाचार नहीं था जो नई तालीम शिक्षण की तकनीक का उपयोग करते थे। अमेरिका की नई तालीम का बेहतर उदाहरण है जिसनें श्रम की गरिमा, गुरुकुल प्रणाली और ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जिसनें अमेरिका को अल्प समय में समृद्ध बनाया। भावनगर के वलुकड़ गाँव के परिसर और छात्र-जीवन की तुलना सबसे पुराने डेनिश पीपुल्स हाई स्कूल वेलकिल्ड से की जा सकती है! नई तालीम 3H के बराबर है और यह यूनेस्को के 4 स्तंभों की तरह तथा अब्राहम लिंकन के 4H विचार – बुद्धि, ह्रदय, हाथ, स्वास्थ्य जीवन शैली जैसा ही है। 4 स्तंभ सीखने की प्रक्रिया से सरोकार रखते हैं।(सीखने, करने, होने और साथ रहने के लिए)। यह समग्र अस्तित्व के रूप में शिक्षार्थी के साथ उसकी कल्पना से संबंधित होना चाहिए।

**- मस्तिष्क द्वारा - बुद्धि द्वारा - ह्रदय द्वारा और - स्वास्थ्य के रूप में**

विभिन्न विषयों को संबद्ध करने के कई तर्क हैं। गणित, निगमनात्मक तर्क पर आधारित है और भौतिक विज्ञान आगमनात्मक तर्क पर आधारित है। दोनों को 'बुद्धि' के साथ जोड़ा जा सकता है। भाषा समुदाय के साथ जुड़ने का उपकरण है। सामाजिक विज्ञान के माध्यम से समुदाय की संरचना और गतिशीलता को समझा जाता है। आम तौर पर भावनाएं दिल से जुड़ी होती हैं; इसलिए मानव समूह भी जीवित जगत का हिस्सा है। एक बच्चे को स्वयं के साथ, प्रकृति के साथ और समुदाय के साथ एक स्वस्थ एवं सामंजस्यपूर्ण संबंध रखना पड़ता है। डॉ. करुणाकरण ने एकसाथ कई विचारों की उत्पत्ति के लिए नई तालीम को लागू करने और एक मंच पर लाने के लिए सभी विश्वविद्यालयों/विभागों के समर्थन की पेशकश की। वे बहुत आशावादी थे कि हमें जल्दी ही राहत मिलेगी जब मालूम होगा कि अनुभवजन्य शिक्षण के माध्यम से गणित, विज्ञान और अंग्रेजी को कैसे सुनियोजित करना है।

**जिनके बहुत करीब था कृषि उद्योग**

वैज्ञानिक कृषि और मूल्य संवर्धक उद्योग में कृषि उद्योग (Agrindus) बारह महीने का एक आवासीय कार्यक्रम है। यह माना जाता है कि कृषि और उद्योग एक निरंतरता निर्मित करते हैं, और कृषि उत्पादन के मूल्यवर्धन के साथ औद्योगिक गतिविधियाँ आर्थिक रूप से मजबूत, आत्मनिर्भर गांवों का निर्माण करने में मदद करेगी जो ज़रूरी बुनियादी सुविधाओं और सेवा सुविधाओं से सुसज्जित है। कृषि उद्योग संस्थान स्थापित थे यह इस पृष्ठभूमि के खिलाफ है। कृषि उद्योग संस्थान महारोगी सेवा समिति (मनोहरधाम दत्तपुर के नाम से प्रसिद्ध) का हिस्सा है। जो 1936 में गांधीजी और विनोबाजी के मार्गदर्शन और समर्पित भाव से श्री मनोहर दीवान के प्रयास के द्वारा स्थापित हुआ। यह केंद्र महान समाजसेवकों, जैसे बाबा आमटे के लिए सीखने का स्थान बना और अपनी कृषि, डेयरी तथा ग्रामीण उद्योगों पर आधारित नवीन पुनर्वास विधियों' के लिए लोकप्रिय हुए। MSS दत्तपुर का एक मात्र उद्देश्य था ग्रामीण उद्योगों का विकास। (source: htt p://missionsamriddhi.org/) कृषि उद्योग के छात्रों के पहले बैच ने सीखा कि एक बिज़नस के रूप में प्रबंधन कैसे किया जाता है और सामने आई कई तकनीकी, कार्यक्रम तथा व्यवसायिक परिस्थितियां। तकनीक, जिसमें पारंपरिक व आधुनिक दोनों का विवेकपूर्ण उपयोग शामिल है। वर्षों का अनुभव और नवीन तकनीकी का मेल बेहतरीन परिणामों के लिए किया गया है।

मृतकों के जीवन को जीवित लोगों की स्मृति में रखा गया है - मार्कस ट्यूलियस सिसेरो

## संपादक की टिप्पणी

एमजीएनसीआरई अपने लक्ष्यों को पूरा करते हुए एक सफल रूप में वित्तीय वर्ष 2018-19 पर ख़त्म हुआ। वहीँ एक दुःख का कारण है डॉ टी करुणाकरण, मार्गदर्शक, एमजीएनसीआरई व नई तालीम के पथप्रदर्शक जो गंभीरता से लक्ष्य पर केन्द्रित थे। मरणोपरांत भी वे अमिट नश्वर रहेंगे।

डॉ. टी करुणाकरण एमजीएनसीआरई की नई तालीम गतिविधियों के लिए समर्थन को विस्तार रूप दे रहे थे। वह इसलिए खुश थें कि उन्होंने मुझमें नई तालीम की ज़रूरत और इसे राष्ट्रीय प्रभाव बनाने के लिए एक नेतृत्व करने वाले सैनिक को पाया। इसमें कोई संदेह नहीं है, उन्हें एमजीएनसीआरई में सभी नई तालीम गतिविधियों के लिए इसके संरक्षक के रूप में सम्मानित किया गया है। डॉ. टी. करुणाकरण ने 12 मार्च को मुंबई में अंतिम सांस ली। वे 73 वर्ष के थे- दिल से युवा, अपनी अंतिम सांस तक अपने आदर्शों की दिशा में लगातार काम करते रहें। मैं उनके साथ अपनी आखिरी मुलाकात को दुखद रूप से याद करता हूँ । एक महीने पहले यानि 27 और 28 फरवरी को स्कूल और शिक्षक अधिगम पाठ्यक्रम और अभ्यासों में नई तालीम और अनुभवजन्य शिक्षा पर शिक्षकों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित थें । यह माननीय के साथ एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम था। उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। माननीय उपराष्ट्रपति को यह जानकर खुशी हुई कि भारत के सभी हिस्सों के शिक्षाविद सम्मेलन का हिस्सा थे। यह सम्मलेन हमारे लिए एक मौका था, एक साल किये गए कार्यों का जायजा लेने का।

इसके साथ-साथ भविष्य के लिए एक रास्ता तैयार करने का और खुद के लिए एक क्रियात्मक योजना बनाने का । जिसे शिक्षक शिक्षा संस्थान जो छात्र शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे और छात्रों के साथ काम करेंगे। डॉ. करुणाकरण कार्यक्रम के प्रारंभ से अगले दिन कार्यक्रम के अंत तक वहीं थे। उस महान आत्मा को विनम्र नमन, वे एक ऐसे व्यक्ति थे, कभी बाध्य, कभी सीखने, कभी सलाह, कभी अपनी विशेषज्ञता की पेशकश करने और ज्ञान साझा करने के लिए तैयार रहते थें। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपने आदर्शों के साथ जीते थे। हमारे मुख्य अतिथि के रूप में आने पर उन्हें इस कार्यक्रम में बड़े आदर से सम्मानित किया गया। उन्होंने दो दिनों के कार्यक्रम में श्रमसाध्य रूप से अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने सिर्फ एक

टिप्पणी की कि मनुष्य के रूप में, हम सभी के पास समय की सीमाएँ हैं। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि इतनी बड़ी कठोर चट्टान पिघल जाएगी। उनकी मृत्यु से मैंने अपना गुरु खो दिया है। मैं बिखर गया हूँ । उनका निधन गांधीजी की नई तालीम के लिए एक बड़ा आघात है। इस संदर्भ में आइए हम उनकी स्मृति में एक शपथ लें कि हम नई तालीम पाठ्यक्रम और इस पाठ्यक्रम को राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली - बच्चों, शिक्षकों और हम सभी के लिए एक बहुवर्षीय लेखा के रूप में परिभाषित करेंगे। जब मैंने इस मिशन की शुरुआत साल के आरंभ में की, तो वह हर हाल में मेरे साथ खड़े रहें और उसके बाद से उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने बस से, ट्रेन से यात्रा की और कभी बहुत आरामदायक आवास में नहीं रहें । उन्होंने लंबे समय तक दिन और रात में भी काम किया। जो भी उपलब्ध था, जहां भी आवश्यक हो वहाँ बैठ गए- जितने घंटे के लिए हो। उन्होनें कई कार्यक्रम और यात्राएं कई बार की , ज़रूरत के अनुसार। वे शारीरिक रूप से मेरे साथ नहीं रहे हैं लेकिन उनकी आत्मा मेरे साथ है। उनके धीरज ने मुझे जीवन में कई सकारात्मक चीजें सिखाई हैं। अब, मैं केवल अधिक अथक, अधिक अनिश्चित, अधिक दृढ़ हो सकता हूँ। मैं दिन-रात उनका आशीर्वाद मांगता हूँ। वह मेरे लिए दिव्यज्योतिरुपी रहे हैं, जिन्होंने मुझे नई तालीम का सही मतलब समझाया। आजीवन प्रोफेसर करुणाकरण हमारे दिलों में... हमारे हाथों में...हमारि बुद्धि में...स्वर्ग लोक प्रतिष्ठु दीप के रूप में रहेंगे।

अब हम, भारत भर में गोल मेज, कार्यशालाओं और प्राध्यापक विकास कार्यक्रमों का संचालन करके अपनी नई तालीम गतिविधियों के साथ जारी रखते हैं। मुझे खुशी है कि हम मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा परिकल्पित रूप से पाठ्यक्रम और अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए प्रोग्राम पर कुछ किताबें पूरी कर सकते हैं। हमने 22 और 23 मार्च को एमबीए कार्यक्रम में दो दिवसीय प्राध्यापक विकास कार्यशाला आयोजित की थी, जिसमें निजी एमबीए विश्वविद्यालयों और संस्थानों की उपस्थिति दर्ज की गई थी। उनके द्वारा इस पाठ्यक्रम को लेने के बारे में सकारात्मकता थी। और उनमें से कुछ ने अपने विश्वविद्यालयों / संस्थानों में आगामी शैक्षणिक वर्ष में इस एमबीए कार्यक्रम को शुरू करने के लिए प्रक्रियाएं शुरू कर दी हैं। मैं श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव, वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार, एमएचआरडी और संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, जो इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं मिशन के पीछे है, उन्हें धन्यवाद देता हूँ । इस एमबीए कार्यक्रम में मंत्रालय द्वारा दिखाई गई विशेष रुचि अधिक उत्साहजनक रही हैं।

हमने सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता के लक्ष्य के साथ ग्रामीण स्वच्छता, पेयजल और अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम पर रणनीति को अंतिम रूप दिया। हमने आईआईटी दिल्ली के साथ ग्रामीण तकनीकी और सामुदायिक अनुबंध के लिए रणनीति को भी अंतिम रूप दिया। ग्रामीण जल आपूर्ति और स्वच्छता में काम कर रहे पेशेवरों के लिए सर्टिफिकेट कोर्स के साथ-साथ इग्नू दिल्ली में रूरल एंटरप्रेन्योरशिप और ग्रामीण पर्यटन पर ध्यान देने के साथ ग्रामीण प्रबंधन में बीकॉम भी संभव है। जैसे-जैसे इस वित्तीय वर्ष का अंत होता है, नया साल अप्रैल से शुरू होता है ताकि लक्ष्य को हासिल करने के लिए और अधिक सपने पूरे किए जा सकें। डॉ. टी. करुणाकरण के पदचिन्हों पर चलते हुए हम अपनी नई तालीम गतिविधियों के साथ आगे बढ़ते हैं। हम इस महीने के समाचार पत्र को महान आत्मा डॉ. टी. करुणाकरण को समर्पित करते हैं।

**डॉ. डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार**

अध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

मैं हमारे गुरु डॉ. टी. करुणाकरण के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूँ । मुझे उनका सौम्य व्यक्तित्व अच्छी तरह याद है क्योंकि उन्होंने अपने लक्ष्य और दृष्टिकोण और नई तालीम गतिविधियों के बारे में उत्साहित होकर बात की थी। यह मानव जाति के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है क्योंकि वह एक दिव्य आत्मा, एक निपुण व्यक्ति, एक व्यक्ति जो सबसे कठिन परिस्थितियों में ढल सकता है, अपना जीवन जीता है। मैं केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो और वह ऊपर से हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि एमजीएनसीआरई ने अपने परिसर में सम्मेलन और प्रशिक्षण सुविधाओं के लिए बुनियादी ढाँचा पूरा कर लिया है। सुविधाएं प्रशिक्षण कार्यक्रमों, आगामी दिनों, कौशल निर्माण सत्रों और कार्यशालाओं के लिए आदर्श हैं जिसमें आर्ट स्टूडियो और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग उपकरण, एलसीडी प्रोजेक्टर, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, वाइट बोर्ड्स फ्लिप चार्ट, फोटोकॉपी सुविधाएं, लैपटॉप और अन्य आवश्यक उपकरण हैं। हम पूरे देश को जोड़ने वाले वीडियो के लिए इस सुविधा का उपयोग करने और ग्रामीण सामुदायिक सहभागिता और विकास के लिए ऑनलाइन शैक्षिक संसाधनों को साझा करने का इरादा रखते हैं। अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए कार्यक्रम पर दो दिवसीय कार्यशाला सकारात्मक संदेश और भारत भर में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों / HEIs में कार्यान्वित किए जा कार्यान्वयन किया गया - सही मायने में यह एमजीएनसीआरई के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

**डॉ. भारत पाठक**

उपाध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

आईआईटीदिल्ली में क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों (आरसीआई) की यूबीए बैठक

एमजीएनसीआरई ने 6 मार्च को संस्थानों पर उच्च शिक्षा के ग्रामीण प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप को बढ़ावा देने और निगरानी के लिए आईआईटीदिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

12 दिवसीय से 18 फरवरी तक महाराष्ट्र के वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय में 7 दिवसीय एफडीपी का आयोजन किया गया।

डॉ. देवेन्द्रनाथ दास, सहायक निदेशक, एमजीएनसीआरई ने राउंडटेबल्स, कार्यशालाओं और एफडीपी का संचालन किया।

6 से 12 जनवरी, पटना विश्वविद्यालय में भी आयोजित हुआ 7 दिवसीय एफडीपी

7 फरवरी, 2019 को ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार में शिक्षा विभाग में एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।

# अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए के लिए प्राध्यापक विकास कार्यशाला

22-23 मार्च को हैदराबाद के एफटीएपीसीसीआई में विषय अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए के लिए आयोजित संकाय विकास कार्यशाला को अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए के प्रस्तावित पाठ्यक्रम के साथ चुनिंदा स्वायत्त संस्थानों, विश्वविद्यालयों और प्रबंधन संस्थानों को परिचित कराने के उद्देश्य से रखी गयी थी।इसने 2019-20 से पाठ्यक्रम परिचय के तौर-तरीकों पर चर्चा करने, अपने संस्थानों द्वारा आवश्यक समर्थन और भवन निर्माण उद्योग - अकादमिक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया। **श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव**, वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार, एमएचआरडी और अतिरिक्त सचिव, एमएचआरडी ने पाठ्यक्रम और मंत्रालय द्वारा लिए जा रहे विशेष हित के पीछे के दृष्टिकोण और मिशन को साझा किया। उन्होंने साझा किया कि वे पाठ्यक्रम से बाहर कैरियर बनाकर उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना चाहते हैं। अपशिष्ट प्रबंधन की पहल के साथ वेस्ट मैनेजमेंट वाले एमबीए को सोचा गया क्योंकि इसकी बहुत मांग थी। देश को एक प्रशिक्षित कार्यबल की आवश्यकता है। होटल, रिसॉर्ट, नगरपालिका, पीसीबी, गेटेड समुदाय, होटल और अस्पतालों में लाखों नौकरियां हैं। यह कोर्स रोजगार को बढ़ावा देगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि एमएचआरडी अपने दो हथियारों एआईसीटीई और यूजीसी के साथ पाठ्यक्रम को मंजूरी देगा। यह एक क्षेत्र उन्मुख पाठ्यक्रम है, जिसमें उद्योग में इंटर्नशिप के साथ कक्षा व्याख्यान और क्षेत्र स्तर का प्रदर्शन होता है। उन्हें खुशी थी कि प्रतिनिधियों ने इस पाठ्यक्रम की क्षमता का एहसास किया था और इस पाठ्यक्रम के अग्रणी थे। उन्होंने कहा कि एमएचआरडी छात्र और शिक्षक विनिमय कार्यक्रम करने के लिए प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से भी संपर्क कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि छात्र विनिमय से वैश्विक रोजगार में मदद मिलेगी। एआईसीटीई के सलाहकार - I (P and AP), **प्रो राजीव कुमार** ने चुनिंदा निजी प्रबंधन संस्थानों / विभागों द्वारा अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक

उद्यमिता कार्यक्रम में दो साल के एमबीए की शुरुआत का स्वागत किया। उन्होंने प्रतिनिधियों को सूचित किया कि एमएचआरडी के अनुरोध के अनुसार, पाठ्यक्रम की आवश्यकता और परिणामों की विधिवत जांच करने के बाद पाठ्यक्रम को औपचारिक रूप से एआईसीटीई कार्यकारी परिषद द्वारा अनुमोदित किया जाएगा। यह इस उत्साह को पूर्ण भाव में आगे ले जाने के लिए आवश्यक प्रेरणा देगा।

सम्मानित अतिथियों में डॉ. बी जनार्दन रेड्डी, सचिव शिक्षा, सरकार शामिल थे। तेलंगाना के श्री पी. प्रेम कुमार, अध्यक्ष इन्फ्रास्ट्रक्चर सेल, एफटीएपीसीसीआई, सुश्री अलमित्रा पटेल, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट पर सुप्रीम कोर्ट की कमेटी, एफटीएपीसीसीआई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री करुणेंद्र एस जस्सी, श्री वेंकटरामन, उच्च शिक्षा के टीएस काउंसिल के उपाध्यक्ष श्री राजीव लूथरा, डीजीएम, आईटीसी, श्री विवेक अग्रवाल सीडीसी जयपुर, डॉ. हितेश भट्ट, निदेशक और प्रोफेसर, आईआरएमए, श्री के. श्रीनिवास, उपाध्यक्ष, तकनीकी, रैमकी एनवायरो इंजीनियर्स लिमिटेड, श्री शारिक खुर्शीद, इंजीनियरिंग निदेशक, ताज ग्रुप होटल, श्री मनीष दया, जीएम, नोवोटेल ग्रुप ऑफ होटल्स, सुश्री अनीता अंतू, सीनियर मैनेजर, संचालन, अपोलो अस्पताल, श्री एसए खादर साहब, सेवानिवृत्त,जेटी। निदेशक, आयुक्त कार्यालय और नगरपालिका प्रशासन के निदेशक, गोएपी, श्री कश्यप देवुलपल्ली, सीनियर मैनेजर, रेयाकल, सुश्री अरुणा शेखर, सन ग्रीन कंपनी, श्री शिव सुब्बारायडू और श्री मुथुकुमारसामी एपी कचरा प्रबंधन निगम, एपी सुरेश भारत निगम, श्री सुरेश के लिए भंडारी, मानद सलाहकार, एसडब्ल्यूएम, स्मार्ट सिटी, कोयंबटूर, श्री समीर रेगे, सीईओ, मेलहेमिको एनवायरनमेंट प्रा. लिमिटेड पुणे।

**32 विभाग अध्यक्षों / स्वायत्त संस्थानों, विश्वविद्यालयों और प्रबंधन संस्थानों से प्राध्यापक सदस्यों ने कार्यशाला में भाग लिया।**

**अध्यक्ष एमजीएनसीआरई** ने कमरे में उपस्थित लोगों, उद्योग के प्रतिनिधियों, शिक्षा क्षेत्र के प्रतिनिधियों और निजी और सरकारी क्षेत्र के प्रतिनिधियों का ध्यान आकर्षित किया। इसके बाद उन्होंने एमजीएनसीआरईकी एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि साझा की कि क्यों एक ग्रामीण शिक्षा संगठन अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम पर काम कर रहा है। ऐसा इसलिए भी है कि ग्रामीण क्षेत्र शहरी कचरे के रिसीवर हैं। कचरे के प्रभावी प्रबंधन से ग्रामीण प्रबंधन आसान हो जाएगा। उन्होंने कहा कि शहरी कचरे का कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से निपटारा किया जाना चाहिए।

**डॉ. जनार्दन रेड्डी** ने सुश्री **अलमित्र पटेल** से कितना प्रेरित थे, इसकी शुरुआत की। उन्होंने जीओआई की ओर से समग्र पाठ्यक्रम विकसित करने की पहल करने के लिए एमजीएनसीआरई को बधाई दी। उन्होंने कहा कि समस्या शहरी क्षेत्रों में अधिक विकट है और ग्रामीण क्षेत्र पीड़ित हैं। उन्होंने एमबीए प्रोग्राम के लिए अपशिष्ट प्रबंधन पर दोनों पुस्तकों की सराहना की।

सुश्री अलमित्रा पटेल ने साझा किया कि कचरे को संभालने पर एक उम्मीद है, और हमें काम की मात्रा को सुनियोजित करने की भी आवश्यकता है।

श्री शिव सुब्बारायडू और श्री मुथुकुमारस्वामी, एपी स्वच्छ भारत निगम के एपी अपशिष्ट प्रबंधन कंसल्टेंट्स, ने एमबीए में डेटा एनालिटिक्स पाठ्यक्रम शामिल करने का सुझाव दिया।

प्रो जया कुमार, संकाय अध्यक्ष एवं अध्यक्ष, सिविल इंजीनियरिंग, एनआईटी वारंगल ने कहा कि कोर्स को सीनेट ने जनवरी 2019 में अपने मीटिंग के दौरान स्वीकार कर लिया है। वे एमबीए को स्वीकार करने और शुरू करने के लिए सबसे आगे थे। उन्होंने अन्य विभागों के साथ सहयोग करके इस पाठ्यक्रम पर काम करने की इच्छा व्यक्त की।

डॉ. हितेश भट्ट, निदेशक और प्रोफेसर, आईआरएमए ने अपने विचार साझा किए

डॉ विवेक अग्रवाल, ट्रस्टी सचिव, सीडीसी, जयपुर

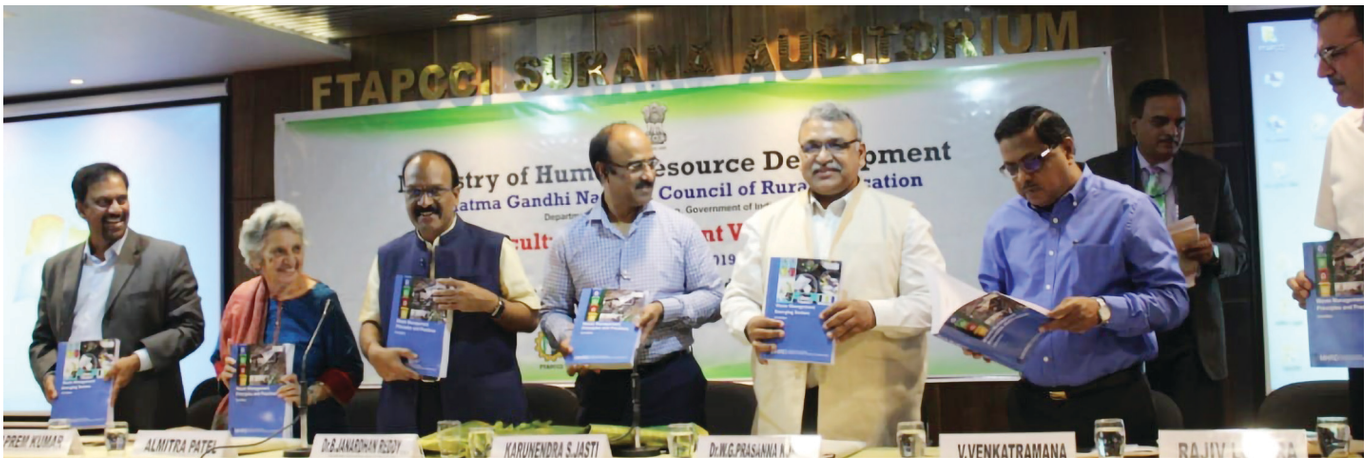


डॉ. बी जनार्दन रेड्डी, सचिव, शिक्षा विभाग, तेलंगाना सरकार के सचिव द्वारा जारी अपशिष्ट प्रबंधन पर पुस्तकों का लोकार्पण

कार्यशाला के अनुवर्ती के रूप में, अपने विश्वविद्यालय में एमबीए प्रोग्राम की शुरुआत के लिए इनपुट और समर्थन देने के लिए उनके विश्वविद्यालय परिसर में बैठकें और राउंडटेबल्स का आयोजन किया गया था।

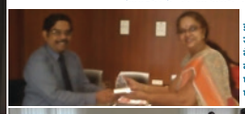

डॉ. एस सुंदर मनोहरन, कुलपति, सत्यभामा विश्वविद्यालयएमबीए प्रोग्राम के लिए पुस्तकों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इन पुस्तकों को जारी करने से एक महत्वपूर्ण जरूरत पूरी होती है - एसबीयू में सुश्री जे पद्मा

पीएसजीआईएम, कोयम्बटूर, 29 मार्च, डॉ के एन रेखा, एमजीएनसीआरई

**कार्यशाला** **तेलंगाना राज्य में सभी विश्वविद्यालयों में सामुदायिक अनुबंध प्रशिक्षुता पाठ्यक्रम पर कार्यशाला-1 मार्च**

इसका उद्देश्य स्नातक (UG) और स्नातकोत्तर (PG) स्तर पर अपने विश्वविद्यालयों / विभागों में कार्यान्वित की जा रही वर्तमान सामुदायिक सहभागिता गतिविधियों को साझा करना था; यूजी और पीजी स्तर पर सामुदायिक अनुबंध के प्रभावी कार्यान्वयन में अंतराल की पहचान करना और प्रस्तुत करना; अपने विश्वविद्यालयों / विभागों में यूजी और पीजी स्तर पर सामुदायिक सहभागिता पर प्रशिक्षुता घटक पर चर्चा, विश्लेषण और प्रस्तुत करना; विशिष्ट चरणों को सूचीबद्ध करके अपने विश्वविद्यालयों / विभागों में यूजी और पीजी स्तर पर सामुदायिक अनुबंध पर प्रशिक्षुता पाठ्यक्रम शुरू करने से पहले काम करना; और उनके विश्वविद्यालयों / विभागों में यूजी और पीजी स्तर पर सामुदायिक अनुबंध पाठ्यक्रम शुरू करने में आवश्यक समर्थन सूची के लिए। प्रतिभागियों में अध्यक्ष टीएससी एचई, उपाध्यक्ष टीएससीएचई, कुलपति, विभागों के प्रमुख, डीन और संकाय सदस्य शिक्षा, इंजीनियरिंग, सामाजिक कार्य और तेलंगाना राज्य में नियमित और मुक्त विश्वविद्यालयों से एनएसएस शामिल थे।

टीएससीईई के अध्यक्ष प्रो टी पपी रेड्डी ने कुलपति, एमजीएनएनआरई प्रतिनिधियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और दिन के कार्यसूची को साझा किया। श्री. पी. मुरली मनोहर सदस्य सचिव, एमजीएनसीआरई ने टीएससीएचई के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, माननीय कुलपतियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

## एफडीपी — कुमाऊं विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, 5 से 11 मार्च तक

कुमाऊं विश्वविद्यालय में आयोजित 7 दिवसीय एफडीपी ग्रामीण प्रबंधन पर था। एमजीएनसीआरई, आईपीएसडीआर के सहयोग से ग्रामीण प्रबंधन और उद्यमिता विकास (आरएमईडी) में एक अद्वितीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम-एमबीए सफलतापूर्वक शुरू करने के बाद, कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल को छात्रों के साथ आदान-प्रदान करने के लिए एवं शिक्षाशास्त्र विकसित करने के लिए एक एफडीपी के आयोजन की जिम्मेदारी दी गई।

चूंकि इसमें शामिल मुद्दे अलग-अलग विषयों से संबंधित हैं, इसलिए प्रबंधन, अर्थशास्त्र और वाणिज्य की मुख्य धारा के अलावा विभिन्न विषयों से प्राध्यापकों को शामिल करके एक बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाया गया था।

पहला सत्र 'मुक्त चर्चा एवं अपेक्षा' पर आधारित था, जिसे एमजीएनसीआरई के प्रोफेसर अतुल जोशी और एकेडमिक काउंसलर सुश्री सरवानी पांडेय द्वारा सुगम बनाया गया । सुश्री सरवानी पांडे ने सत्र के स्वर और कार्यकाल को निर्धारित किया और एफडीपी के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली और अपेक्षित परिणामों के साथ प्रभावों को परिचित कराया। डॉ. ललित पांडे पद्मश्री ', टेक्नोक्रेट, पूर्व-आईआईटीयन और पीएचडी एमआईटी, यूएसए से, ग्रामीण प्रबंधन के प्रति द्वैतवादी दृष्टिकोण पर जोर दिया। विकास और चर्चा की रणनीतियों ताकि ग्रामीण व्यापार उपक्रमों और विकास कार्यक्रमों का लाभ जमीनी स्तर पर काम करने वाले लोगों को मिले। अन्य प्रख्यात वक्ताओं में शामिल थे, प्रख्यात समाजशास्त्री प्रो. इंदु पाठक, आईपीएसडीआर में एक प्राध्यापक सदस्य डॉ. प्रदीप जोशी, डॉ के के पांडे, एक शैक्षणिक सलाहकार जिनके पास विविध कार्यों का अनुभव हैं । विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में, डॉ. आशुतोष सिंह, कॉलेज ऑफ एग्रीबिजनेस, जी.बी. पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर, डॉ. अरुण कुक्षल, सामाजिक और पर्यावरणीय कार्यकर्ता, डॉ नीलम यादव, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) में प्राध्यापक, और श्री गगन आनंद बैंकिंग क्षेत्र से, फ़िल्म समीक्षा और फ़िल्म प्रदर्शन (i) हिवरे बाजार आदर्श ग्राम (ii) मस्कटिया व्यूज़ और फिल्मों के बारे में राय प्रस्तुत की गई और सुश्री सरवानी पांडे और श्री गगन आनंद द्वारा विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया। ग्रामीण मग्नता भ्रमण उत्तराखंड की ग्रामीण व्यवस्था के साथ प्रतिभागियों को परिचित करने के लिए तल्लारामगढ़ में झूटिया में आयोजित किये गए। उद्यमिता में एक मान्य प्राधिकारी प्रो एस एस खनका ने उद्यमिता के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। क्यूरेटर और कलाविद सुश्री किरण तिवारी ने कुमाऊं की संस्कृति का प्रभावशाली मंचन किया। डॉ. प्रदीप जोशी ने केस लिखने की तकनीक बताई। छात्रों को उनके विलेज इमर्शन प्रोग्राम से सम्बन्धित केस स्टडी को लिखने के लिए कहा गया।

## एफडीपी — श्री पद्मावती महिला विश्व विद्यालय, तिरुपति - 5 से 11 मार्च तक

"ग्रामीण सरोकार और सामुदायिक अनुबंध" पर 7-दिवसीय एफडीपीका उद्घाटन प्रो. वी. उमा, प्रभारी कुलपति ने किया। एफडीपी का आयोजन सेंटर फॉर ट्रांसलेशनल रिसर्च द्वारा किया गया था। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो के के मुरगैया ने ग्रामीण विकास के गांधीवादी दर्शन को सामने लाया। सम्मानीय अतिथि के रूप में प्रोफेसर पी विजया लक्ष्मी, निदेशक, सीटीआर, प्रोफेसर आर. उषा, सदस्य सीटीआर, श्री शामिल थे। जी. गोपाल कृष्ण मूर्ति, कार्यकारी निदेशक सह सदस्य सचिव, गांधीवादी अध्ययन अकादमी, तिरुपति। श्री दिवाकर, वरिष्ठ सलाहकार, एमजीएनसीआरई, हैदराबाद ने कार्यवाही को सुविधाजनक बनाया।

अपने मुख्य संबोधन में, श्री गोपाल कृष्ण मूर्ति ने दोहराया कि गांधीजी का मानना था कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण को गाँवों के पुनर्निर्माण से ही हासिल किया जा सकता है। श्री दिवाकर ने कार्यशाला के उद्देश्य और कार्यशाला की अवधि के दौरान होने वाली गतिविधियों की सामग्री और प्रकृति के बारे में बताया। प्रो. अनुराधा ने कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में बताया और प्रो. विजया लक्ष्मी ने सीटीआर के उद्देश्यों को सुनाया। प्रो. आर. उषा ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। एफडीपी पूरी तरह से प्रकृति में भागीदारीपूर्ण था और इसमें ग्रामीण समुदाय की अवधारणा को समझना और संसाधन मानचित्रण, सामाजिक मानचित्रण, रैंकिंग और स्कोरिंग तकनीक, आजीविका विश्लेषण और फ़ोकस चर्चा और साक्षात्कार के उपयोग जैसी आंशिक गतिविधि और शिक्षण गतिविधियाँ शामिल थीं।

## एफडीपी ए एन सिंह संस्थान सामाजिक विज्ञान, पटना, बिहार - 7 से 13 मार्च, 2019

एफडीपी को नई तालीम, अनुभाजन्य अधिगम, कार्य शिक्षा और सामुदायिक अनुबंध, शिक्षक अधिगम पाठ्यक्रम में आयोजित किया गया था। एफडीपी का उद्देश्य केन्द्रित था - शिक्षा उद्योग को श्रेष्ठ बनाना, शिक्षक शिक्षा और पाठ्यक्रम को अप टू डेट करना; नई तालीम के सन्दर्भ में स्कूल तथा शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कुछ परिप्रेक्ष्यों और समझ को विकसित करना, ग्रामीण समुदाय के छात्रों को समुदाय चर्चा में सक्षम बनाना. " समग्र शिक्षा अभियान" के अंतर्गत शिक्षकों को प्रस्तावित पाठों और प्रभावी क्रियाकलापों व परीक्षाओं को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना।

एफडीपी प्रमुख कार्यक्रम ने शिक्षा, स्वास्थ्य मुद्दों, राजनीतिक जागरूकता और सरकार के बारे में ग्रामीण लोगों में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता को सामने लाया। यह तब संभव हो सकता है जब हम शिक्षक भागीदारी, भागीदारी और छात्र भागीदारी के माध्यम से उनके साथ काम करते हैं। नई तालीम के महत्त्व को वर्तमान संदर्भ में जाना जाता है और प्राध्यापकों को बुद्धि, ह्रदय और हाथ के समन्वय में गांधीवादी दर्शन की अवधारणा को शामिल करने की आवश्यकता है, वह नई तालीम है।

## एफडीपी विश्व - भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल - 9 से 15 मार्च

ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध पर 7 दिवसीय एफडीपी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने वाले एमजीएनसीआरईके सदस्य सचिव, प्रो मुरली मनोहर पी, विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्तियों में प्रो प्रशांत कुमार घोष प्रोफेसर, सामाजिक कार्य विभाग, प्रो। असोक सरकार, प्राचार्य पल्ली संस्था विभा, और प्रोफेसर शंकर मजुमदार, ग्रामीण अध्ययन विभाग के प्रोफेसर शामिल थे। प्रो डी के चक्रवर्ती, वरिष्ट प्राध्यापक, एमजीएनसीआरई ने कार्यवाही को सुविधाजनक बनाया। प्रो मुरली मनोहर ने ग्रामीण उद्यमिता के विकास के लिए सामुदायिक सहभागिता के महत्त्व पर बल दिया क्योंकि अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं। प्रो. चक्रवर्ती ने एफडीपी के उद्देश्य को समझाया और अनुभवात्मक अधिगम, कार्य शिक्षा और सामुदायिक अनुबंध के महत्त्व पर प्रकाश डाला। एफडीपी का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में ग्रामीण प्रबंधन को मुख्यधारा में लाना है। प्रो असोक सरकार ने देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण उद्यमिता की भूमिका और कार्य को बताया।

प्रो शंकर मजुमदार ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उनका हरसंभव सहयोग करने को कहा। उन्होंने इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता का उल्लेख किया और बताया कि छात्रों को न केवल ग्रामीण समुदाय के लिए आय उत्पादक बनना चाहिए अपितु ग्रामीण समुदाय के चिरस्थायी विकास के लिए भी सहायक होना चाहिए।

## एफडीपी कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी, पश्चिम बंगाल, 6 से 12 मार्च तक

प्रो शंकर घोष, माननीय कुलपति, कल्याणी विश्वविद्यालय, ने अनुभवजन्य अधिगम पर एफडीपी का उद्घाटन किया – गांधीजी के नई तालीम। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में प्रो तपन कु. बिस्वास, संकाय अध्यक्ष, कला, वाणिज्य और शिक्षा संकाय, दिब्येंदु भट्टाचार्य, शिक्षा विभाग। मुख्य भाषण प्रोफेसर दिलीप के चक्रवर्ती, सीनियर फैकल्टी, एमजीएनसीआरई, और कार्यवाही के लिए सूत्रधार द्वारा दिया गया था। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो जयंत मेटे और शिक्षा विभाग के डॉ. तारिणी हालदार थे।

प्रो शंकर घोष ने स्कूल और शिक्षक अधिगम पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति के महत्त्व पर जोर दिया। तपन कु. बिस्वास ने कला और संस्कृति के महत्त्व पर जोर दिया और कहा कि अनुभवात्मक अधिगम को मातृभाषा के माध्यम से हस्तांतरित किया जाना चाहिए। प्रो. चक्रवर्ती ने शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी के महत्त्व और इस तरह के एफडीपी के उद्देश्य और लक्ष्य के बारे में बात की। धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विभाग के प्रोफेसर दिब्येंदु भट्टाचार्य ने दिया।

## एफडीपी तेलंगाना विश्वविद्यालय, निजामाबाद - 19 से 25 मार्च तक

### ग्रामीण जन संचार, आरसीई और ग्रामीण मग्नता और एसएफडीआरआर और ग्रामीण लचीलापन

7-दिवसीय एफडीपी का उद्देश्य विभिन्न विषयों के प्राध्यापक सदस्यों को ग्रामीण संचार, ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध , रूरल इमर्शन, नई तालिम अनुभवजन्य अधिगम और ग्रामीण लचीलापन जैसी अवधारणाओं में प्रशिक्षित करना है। ग्रामीण मग्नता के दौरान सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन, भागीदारी सीखने की गतिविधि, संसाधन मानचित्रण, और गांवों के सामाजिक मानचित्रण जैसी तकनीकों में अनुभव पर प्राध्यापक सदस्यों को साथ देने की भी परिकल्पना की गई थी। ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध के बारे में और नई तालिम अनुभवात्मक अधिगम के बारे में समग्र दृष्टिकोण देना एफडीपी का मुख्य विषय है। इसका उद्देश्य पूरी तरह से व्यावहारिक और वास्तविक ग्रामीण हालत में ग्रामीण मुद्दों पर अनुभव और व्यक्तियों को विकसित करना है और यह समझना कि हम विकास की गतिविधि का हिस्सा बनने के लिए समुदाय को कैसे सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं। प्राध्यापक अपनी वर्तमान दशा में एक अनुभवात्मक अधिगम पद्धति से गुजरेंगे। एमजीएनसीआरई के पाठ्यक्रम हस्तक्षेप के कारण कई राज्य और केंद्रीय विश्वविद्यालयों में विशेष रूप से चयनित क्षेत्रों में ग्रामीण सामुदायिक सहभागिता पर पाठ्यक्रम / पत्र तैयार किए हैं: जैसे जनसंचार, सामाजिक कार्य, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान और ग्रामीण अध्ययन और पर्यावरण से संबंधित अन्य क्षेत्र, स्थिरता। जैसा कि पाठ्यक्रम में संबंधित प्राध्यापक के क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। मतलब, एफडीपी को कक्षा प्रशिक्षण और क्षेत्र प्रदर्शन दोनों को शामिल करने का प्रस्ताव दिया गया है। फील्ड एक्सपोजर के साथ टीचिंग और लर्निंग कंपोनेंट्स का आयोजन किया गया।

# कार्यशालाएँ & गोलमेज सम्मलेन

एसआर एंड बीजीएनआर, खम्मम

कालीकट विश्वविद्यालय, केरल

काकतीय विश्वविद्यालय, वारंगल

सीसीएसयू, मेरठ

एमडीयू, रोहतक

वीएसयू, नेल्लोर

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

योगी वेमाना विश्वविद्यालय, कडप्पा

## कार्यशालाएँ

- एसआर गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज कोठागुडेम तेलंगाना- 29 मार्च
- तेलंगाना विश्वविद्यालय, निजामाबाद- 29 मार्च
- एसआर एंड बीजीएनआर गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, खम्मम, तेलंगाना - 28 मार्च
- कालीकट विश्वविद्यालय, केरल - 23 मार्च
- काकाटिया विश्वविद्यालय, वारंगल, तेलंगाना - 5 मार्च
- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, मनचेरियल, काकाटिया यूनिवर्सिटी, तेलंगाना - 28 मार्च
- दिगंबर जैन पी.जी. कॉलेज बड़ौत, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश - 23 मार्च
- महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा - 16 मार्च
- विक्रम सिम्हापुरी विश्वविद्यालय, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश - 19 मार्च
- राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर - 18 मार्च
- श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश –11 मार्च
- योगी वेमाना यूनवर्सिटी, कडप्पा, आंध्र प्रदेश - 19 मार्च
- नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी एनईएचयू, शिलांग, मेघालय – 15मार्च
- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर विमेन, आदिलाबाद, तेलंगाना -30 मार्च
- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, आदिलाबाद, काकाटिया यूनिवर्सिटी,तेलंगाना - 27 मार्च
- आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर, आंध्र प्रदेश - 26 वेमार्च
- जेएनटीयू, हैदराबाद, तेलंगाना - 25 मार्च
- नालंदा डिग्री कॉलेज, आदिलाबाद, तेलंगाना - 23 मार्च
- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, निर्मल, काकाटिया विश्वविद्यालय, तेलंगाना - 20 मार्च
- रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मप्र - 30 मार्च
- लाल बहादुर सिंह स्मारक महाविद्यालय - गोहवार, बिजनौर, उ.प्र.- 20 मार्च

## गोल मेज सम्मलेन

- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, निर्मल जिला।, तेलंगाना –1 मार्च
- नार्थ-इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, (एनईएचयू), शिलॉन्ग - 14 मार्च
- कन्नूर विश्वविद्यालय, केरल -22 मार्च
- आईएएसई, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश - 6 मार्च
- नालंदा डिग्री कॉलेज, आदिलाबाद -23 मार्च
- गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर वुमन, आदिलाबाद जिला, तेलंगाना - 30 मार्च
- अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश -15 मार्च
- महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय, सतना,एमपी - 13 मार्च
- डॉ. मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, यूपी – 30 मार्च
- जम्मू, जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय - 19 मार्च
- क्लस्टर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर, जम्मू और कश्मीर - 16 मार्च
- कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर - 9 मार्च
- भगत फूल महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, हरियाणा – 7 मार्च

सीयू, कश्मीर

जेयू, जम्मू

एमजीसीजीवी, सतना

जीडीसीडब्ल्यू, आदिलाबाद

एसवीयू, तिरुपति

एनईएचयू, शिलांग


सत्यमेव जयते

# महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

उच्च शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शक्कर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004.

तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.in

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी और शिवराम जी, श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित